श्रीराम सांस्कृतिक शोध संसथान के संस्थापक राम अवतार जी की पुस्तक 'जहाँ जहाँ राम चरण चली जाहीं के लिए लिखा लेख

श्रीराम जी के युग की ऐतिहासिकता

सरोज बाला
भारतीय राजस्व सेवा की पूर्व अधिकारी
वेदों पर वैज्ञानक शोध संस्थान की पूर्व निदेशक

'रामायण' आदिकवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा श्रीराम के जीवनकाल के दौरान रचित मूल महाकाव्य है। वाल्मीकि जी ने हजारों वर्ष पहले इस महाकाव्य की रचना की थी। उन्होंने 'रामायण' में तेजस्वी तथा मनस्वी श्रीराम के जीवन चरित्र का वास्तविक एवं रोचक वर्णन किया है। यह एक ऐसी अद्वितीय रचना सिद्ध हुई कि पिछले हजारों वर्षों से विश्व भर के करोडों लोगों ने रामायण की कहानी का लेखन और पठन, चित्रण और गायन, अनुवाद और मंचन इतनी बार किया कि यह एक जीवन्त परंपरा तथा जीवन्त विश्वास बन गई।

सबसे पहले 20वीं सदी के महानतम वैज्ञानिक डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने कहा था, "रामायण का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि वाल्मीकि जी ने महाकाव्य रामायण की रचना करते समय उसमें बहुत से प्रमाण सम्मिलित किए। एक तरफ उन्होंने उस समय पर आकाश में ग्रहों एवं नक्षत्रों की स्थिति एवं बहुत से स्थलों का भौगोलिक चित्रण एवं ऋतुओं का वर्णन किया है, तो दूसरी ओर राजाओं की वंशावलियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी है जिसका वैज्ञानिक विधि से प्रयोग करके उन घटनाओं का समय ज्ञात करना कोई टेढ़ी खीर नही है। आधुनिक तारामंडल सॉफ्टवेयर का उपयोग करके खगोलीय गणनाओं ने यह सिद्ध किया है कि वाल्मीकि रामायण में वर्णित घटनाएं वास्तव में 7000 वर्ष पूर्व उसी क्रम में घटित हुई थीं जैसाकि रामायण में वर्णित हैं। रामसेतु उसी स्थान पर जलमग्न पाया गया है जिस स्थान का वर्णन रामायण में किया गया हैं।" बहुआयामी वैज्ञानिक अनुसंधान रिपोर्टो से उद्धृत तथ्यों तथा साक्ष्यों के आधार पर रामायण में वर्णित घटनाओं का सटीक तथा अनुक्रमिक तिथिनिर्धारण किया गया और निष्कर्ष यह निकाला गया कि आदरणीय डॉ कलाम द्वारा पेश किये गये तथ्य बिल्कुल सत्य हैं।

प्लैनेटेरियम तथा स्टेलेरियम सॉफ्टवेयर का उपयोग कर रामायण के खगोलीय संदर्भों के व्योमचित्र लिये गए। पुरातत्त्व विज्ञान, पुरावनस्पति विज्ञान, भू-विज्ञान तथा समुद्र विज्ञान, रिमोट सेंसिग और अनुवांशिक अध्ययन भी रामायण के इस खगोलीय काल निर्धारण की पुष्टि करते हैं। 7000 वर्ष पुराने ताम्बे

के वाणाग्र, सोने चाँदी के आभूषण, पत्थरों व मोतियों के गहने, टैराकोटा के बर्तन तथा विभिन्न प्रकार के पेड, पौधों व फसलों के अनेकों पुरतत्त्विक प्रमाण भी मिले हैं।

इस **लेख** में दिये गए वैज्ञानिक साक्ष्य हमें यह मानने के लिए मजबूर कर देंगे कि श्रीराम एक ऐतिहासिक चरित्र थे जो सर्वाधिक प्रतिष्ठित, सर्वगुणसंपन्न मर्यादा पुरषोत्तम थे। उन्होने 7000 वर्ष पूर्व वास्तव में एक अतुलनीय कल्याणकारी राज्य की स्थापना की और सम्पूर्ण भारत में बसे भद्र पुरूषों की राक्षसों के अत्याचारों से रक्षा की। इसीलिए तो लाखों करोड़ों लोगों ने उन्हें देवता मानकर पूजना प्रारंभ कर दिया और श्रीराम वास्तव में उनके लिए भगवान स्वरूप बन गए। सूर्यवंशी श्रीराम ने एक आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, एक आदर्श भाई, आदर्श मित्र, आदर्श पति और एक आदर्श समाज सुधारक के रूप में सर्वोच्च मानकों की स्थापना की।

श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न का जन्म तथा उस समय के आकाशीय दृश्य

श्रीराम का जन्म आज से लगभग 7100 वर्ष पहले अयोध्या में ही हुआ, इस तथ्य के अनेकों वैज्ञानिक प्रमाण हैं। पुत्रकामेष्टि यज्ञ समाप्ति के पश्चात् छह ऋतुएं बीत जाने के बाद, 12वें मास में चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र एवं कर्क लग्न में कौशल्या देवी ने दिव्य लक्षणों से युक्त एक यशस्वी और प्रतिभाशाली पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम 'राम' रखा गया। बालकाण्ड में महर्षि वाल्मीकि ने श्रीराम के जन्म के समय देखी गई ग्रहों, राशियों और नक्षत्रों की स्थितियों का विस्तृत वर्णन दिया है। उस समय चन्द्रमा पुनर्वसु नक्षत्र में था और-

1- सूर्य अपने उच्च स्थान मेष में

2- शुक्र अपने उच्च स्थान मीन में

3- मंगल अपने उच्च स्थान मकर में

4- शनि अपने उच्च स्थान तुला में

5- बृहस्पति अपने उच्च स्थान कर्क में

6- चैत्र माह, शुक्ल पक्ष

7- अमावस्या के पश्चात् नवमी तिथि

8- चन्द्रमा और बृहस्पति एक साथ कर्क मे चमक रहे थे

9- कर्क राशि पूर्व से उदय हो रही थी।

इन सभी खगोलीय विन्यासों को अयोध्या के अक्षांश और रेखांश से 10 जनवरी 5114 वर्ष ई. पू. को दोपहर 12 बजे से 2 बजे के बीच के समय मे देखा जा सकता था। यह चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि थी जिस समय समस्त भारत में आजतक रामनवमी मनाई जाती है।

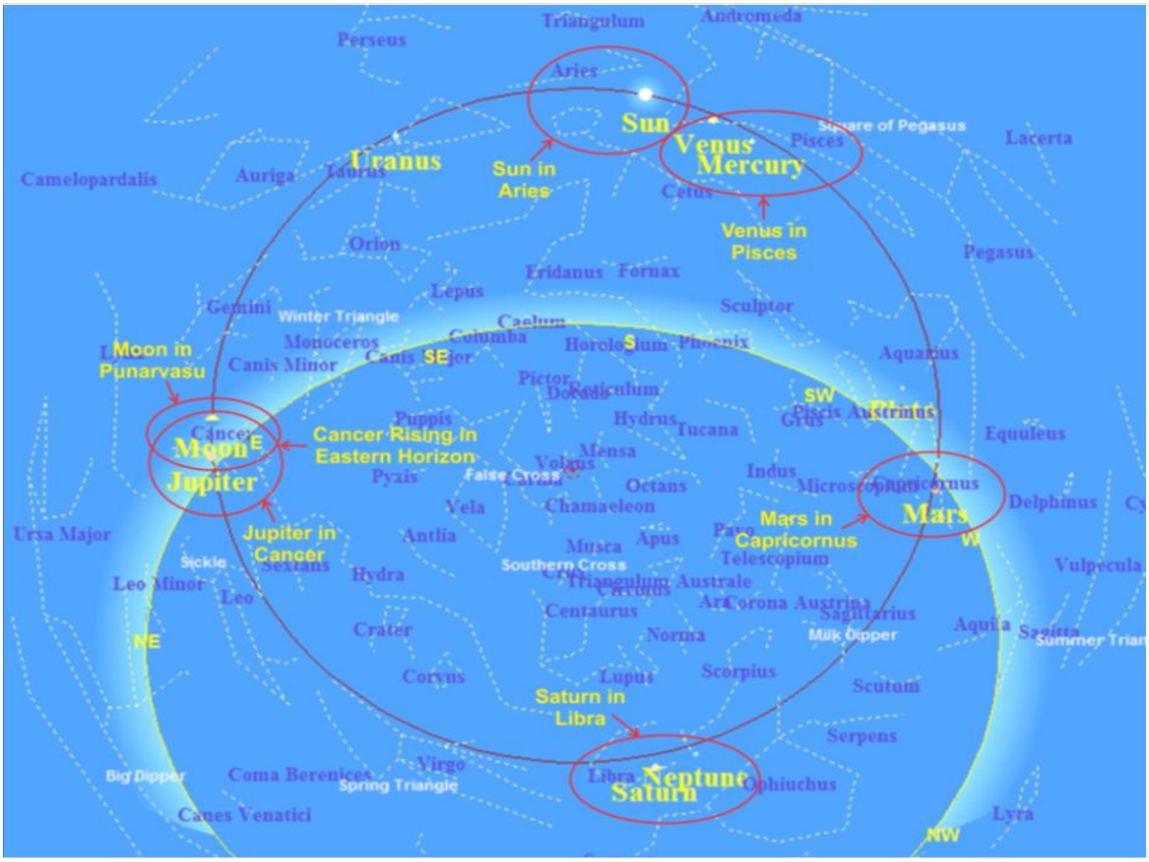

व्योमचित्रः अयोध्या / भारत 27° उत्तर, 82° पूर्व; 10 जनवरी, 5114 ई. पू., 12:30 बजे, चैत्र शुक्ल नवमी

स्टेलेरियम सॉफ्टवेयर महर्षि वाल्मीकि द्वारा वर्णित श्रीराम के जन्म के समय के सभी खगोलीय संदर्भ 19 फरवरी, 5114 ई. पू. को दोपहर के समय आकाश में **दर्शाती है।** यह चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि **ही** थी।

विशेष - दोनों सॉफ्टवेयर 5114 ई. पू. चैत्र मास शुक्ल पक्ष की नवमी ही दिखा रहे हैं; एक ही आकाशीय दृश्य की दो अलग-अलग तिथियाँ दिखने का कारण यह है कि एक वर्ष में 365 दिन 6 घंटे नहीं अपितु 365 दिन 5 घंटे 48 मिनट और 46 सेकंड होते हैं। प्रतिवर्ष 11 मिनट और 14 सैकेंड का ये अंतर 131 वर्ष में एक दिन के बराबर हो जाता है। सन् 1582 ई. में लाए गए ग्रिगोरियन सुधार के आधार पर 4 अक्तूबर को 15 अक्तूबर मानकर 11 दिन का लोप कर दिया गया जिससे पिछले 1441 (1582-1441) वर्षों में आए 131 वर्षों में एक दिन के अंतर का शोधन कर लिया गया परन्तु उससे पहले के 5255 (5114 + 141) के लिए प्लैनेटेरियम सॉफ्टवेयर ने 131 वर्ष में एक दिन के उस अन्तर को समाहित नही किया जबकि स्टेलेरियम सॉफ्टवेयर ने इस अंतर को समायोजित कर लिया है। एक ही आकाशीय दृश्य को दिखाने में 40 दिनों (+/-1) के इस अंतर का यही कारण है।

श्रीराम के जन्म के पश्चात् कैकेयी ने सत्य पराक्रमी भरत को पुष्य नक्षत्र और मीन लग्न में चैत्र शुक्ल दशमी को लगभग 4:30 बजे जन्म दिया। इसके पश्चात् सुमित्रा के दो पुत्रो लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म अश्लेषा नक्षत्र और कर्क लग्न मे 11:30 बजे हुआ। कुछ नवीनत्तम पुरातात्विक खुदाइयों, भूगर्भीय अनुसंधानों और दूरसंवेदी चित्रों ने ऐसे पर्याप्त साक्ष्य प्रदान किए हैं जो न सिर्फ चारों राजकुमारों के जन्म की खगोलीय तिथियों को संपुष्ट करते हैं बल्कि आधुनिक समय की अयोध्या की भौगोलिक की स्थिति के साथ उनका संबंध भी जोड़ते हैं।

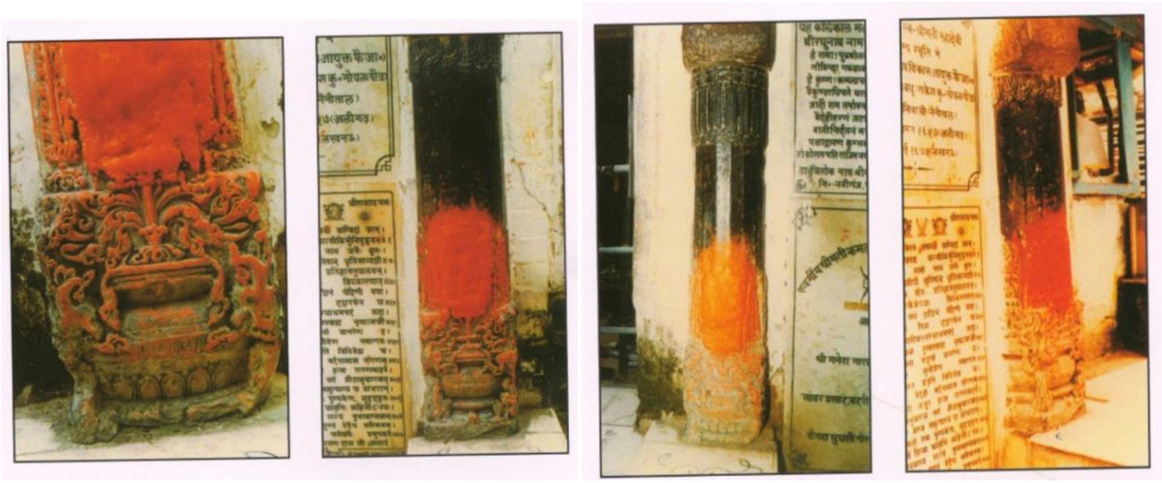

काले पत्थर के खम्भों में से कुछ की तस्वीरें, जो बाबरी मस्जिद के तटबंधों के साथ जोड़े हुए थे (2010 ADJ)

खुदाई में मिले 20 पंक्ति के शिलालेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि बाबरी संरचना के स्थल पर पहले से भगवान विष्णु हरि का भव्य मंदिर था जिसे गढ़वाल के राजा गोविन्द चंन्द्र ने 1114-1154 ईसवी के दौरान बनवाया था।

अयोध्या में जन्मभूमि क्षेत्र से उत्खनित विष्णु हरि शिलालेखए पुरतत्व संख्या 33: 2002-2003

राजा दशरथ के चारों पुत्र शक्तिशाली, सदाचारी, गुणवान तथा मधुर व्यक्तित्व वाले थे। फिर एक दिन ऋषि विश्वामित्र जी पधारे और दस दिन के लिए श्रीराम व लक्ष्मण को अपने साथ ले गए। चौथे दिन श्रीराम ने ताडका का वध कर दिया। ताडका वध से प्रसन्न होकर ऋषि विश्वामित्र ने श्रीराम को दिव्य अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये। **सिद्धाश्रम** पँहुच कर श्रीराम ने मानवास्त्र का संधान किया और बडे रोष से मारीच

की छाती पर प्रहार किया, इससे मारीच सौ योजन की दूरी पर समुद्र में जा गिरा। इसके बाद श्रीराम ने अग्नेयास्त्र का संधान करके सुबाहु की छाती पर चलाया जिससे वह प्राण त्याग कर पृथ्वी पर गिर पड़ा। अगले ही दिन श्रीराम, लक्ष्मण व अन्य ऋषियो को लेकर ऋषि विश्वामित्र मिथिला की ओर उत्तर - पूर्व दिशा में चलने लगे।

विशेषः सिद्धाश्रम से मिथिला के मार्ग में निश्चित रूप से ये लोग उतर प्रदेश के आधुनिक जिले संत कबीर नगर से होकर गुजरे होंगे। इस जिले में लहुरादेवा नामक स्थान पर खुदाई में ऐसे साक्ष्य उपलब्ध हुए हैं, जो वाल्मीकि रामायण का सबंध 7000 वर्ष पूर्व की सभ्यता से स्थापित करते हैं। लहुरादेवा में कृष्ट चावल, सुसज्जित बर्तनों के ठीकरे, पत्थरों के मोती, ताम्र का बाणाग्र व धनुष का किनारा आदि अनेक कलाकृतियाँ मिली हैं तथा इनकी कार्बन डेटिंग 7000 वर्ष पुराना बताती है

ताम्र का बाणाग्र, लहुरादेवा; 5000 वर्ष ई-पू- (सौजन्यः तिवारी राकेश)

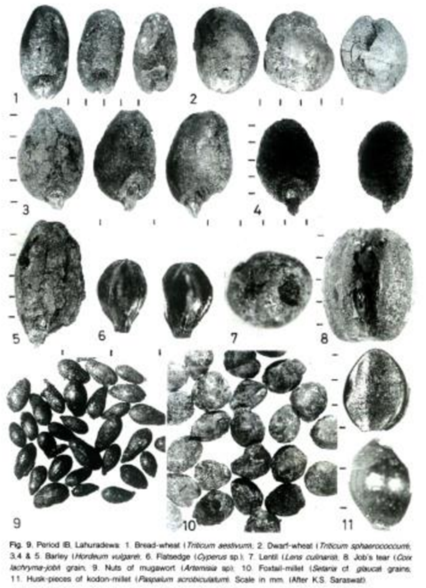

धान, जौ, गेहूँ, दाल, हरा चना, मटर, तिल आंवला, अंगूर, स्वीट पी, घास, मनका

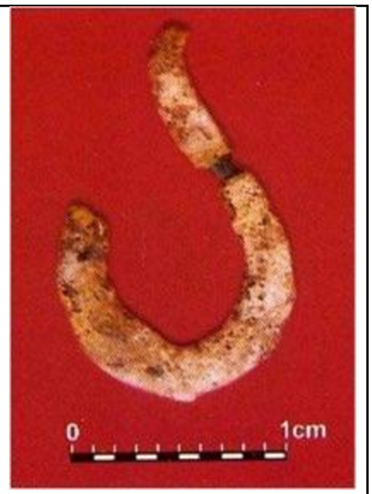

ताम्बे के तीर का फल, लहुरादेवाय 5000 वर्ष ई-पू- (सौजन्यः तिवारी राकेश)

मिथिला की ओर यात्रा के दौरान ऋषि विश्वामित्र ने **गंगा की कहानी** सुनाई। उन्होंने कहा स्वर्ग जैसी ऊँची शिवलिंग की पहाड़ियों से पिंघल कर शिवजी की जटाओं जैसे उलझे हुए गंगोत्री के ग्लेशियरों में घूमने के बाद गंगा का पानी सूर्यवंश के 44वें राजा भगीरथ के प्रयत्नों से राजा सगर (40वें राजा) द्वारा खुदवाए गए मार्ग से धरती पर प्रवाहित हो गंगा सागर में जा मिला। जो इस वृतांत का दैवीय प्रस्तुतीकरण चाहते हैं उनके लिए गंगा (भागीरथी) स्वर्ग से उतर कर भगवान शिव की जटाओं में उलझी, फिर भगीरथ की तपस्या से धरती पर अवतरित हो समुद्र तक बह गई। वैज्ञानिक व तर्कसंगत अर्थ निकालने वालों के लिए गंगा का जल गगनचुम्बी शिवलिंग पर्वत की चोटियों से पिघलकर गंगोत्री ग्लेशियर के घुमावदार रास्तों से होता हुआ, राजा भगीरथ के प्रयत्नों से उत्तर पूर्वी भारत के मैदानों से बहकर रसातल में जा मिला।

मिथिला पहुँचने पर राजा जनक और पुरोहित शतानन्द ने ऋषि विश्वामित्र को उच्च आसन ग्रहण करवाया। दोनों राजकुमारों को मिथिला लाने के लिए राजा जनक ने ऋषि विश्वामित्र का आभार व्यक्त किया। मुनि श्रेष्ठ विश्वामित्रने कहा कि दोनों वीर क्षत्रिय हैं और विश्वविख्यात शिव धनुष देखने की इच्छा

रखते हैं। राजा जनक के आदेशानुसार मंत्री धनुष को एक आठ पहियों की संदूक में ले आये। इसके पश्चात् श्रीराम ने धनुष को बीच में से पकड़कर उठा लिया और उस पर प्रत्यंचा चढ़ाकर कान तक खींचा, ऐसा करने से भयंकर आवाज करता हुआ वह धनुष बीच में से टूट गया। राजा जनक ने प्रसन्न होकर घोषणा की कि पुत्री सीता का विवाह यशस्वी राजकुमार श्रीराम से होगा। राजा जनक ने द्रुतगामी संदेशवाहक अयोध्या में भेजे जो चैथे दिन अयोध्या पहुंचे और विवाह संबधी सारा वृतांत राजा दशरथ को सुनाया। यह शुभ संदेश सुनते ही राजा दशरथ अपने मंत्रियों, पुरोहितों के साथ चार दिनों में मिथिला पहुँचे जहाँ उनका उत्साहपूर्ण स्वागत किया गया। राजा जनक ने छोटे भाई राजा कुशध्वज भी शीघ्र ही मिथिला पहुंच गये। गुरू वसिष्ठ ने इक्ष्वाकु कुल की वंशावली तथा महिमा का वर्णन किया

1	मनु	17	सहंताष्व	33	हरिशचन्द्र	49	अयुतायुस
2	इक्ष्वाकु	18	अकृषाष्व	34	रोहित	50	ऋतपर्ण
3	विकुक्शी-शषाद	19	प्रसेनजित	35	हरित केनकु	51	सर्वकाम
4	ककुत्स्थ	20	युवनाष्व (दूसरा)	36	विजय	52	सुदास
5	अनेनस	21	मान्धातृ	37	रूरूक	53	मित्राशा
6	पृथु	22	पुरूकुत्स	38	वृक	54	अस्मक
7	विश्वरास्व	23	त्रसदस्यु	39	बाहु	55	मूलक
8	आर्द्र	24	संभूत	40	सगर	56	सतरथ
9	युवनाष्व (प्रथम)	25	अनरण्य	41	असमंजस	57	अदिविद
10	श्रावस्त	26	त्राशदष्व	42	अंशुमान	58	विश्वसह (प्रथम)
11	वृहदष्व	27	हर्यष्व (दूसरा)	43	दिलीप (प्रथम)	59	दिलीप (दूसरा)
12	कुवलष्व	28	ब्सुमाता	44	भगीरथ	60	दीर्घबाहु
13	दृधाष्व	29	तृधन्वन	45	श्रुत	61	रघु
14	प्रमोद	30	त्रैयारूण	46	नाभाग	62	अज
15	हर्यष्व (प्रथम)	31	त्रिशंकु	47	अम्बरीश	63	दशरथ
16	निकुम्भ	32	सत्यव्रत	48	सिंधुद्वीप	64	राम

7000 वर्ष पुरानी भारत में विवाह अनुष्ठान से पहले अपने पूर्वजों के नाम का वर्णन करने की परंपरा आज भी चली आ रही है। राजा जनक ने अपनी पहली पुत्री सीता का विवाह श्रीराम से तथा दूसरी पुत्री उर्मिला का विवाह लक्ष्मण से करने का प्रस्ताव रखा। विश्वामित्र ने यह सुझाव दिया कि राजा जनक के भाई कुशध्वज की दोनों पुत्रियों का विवाह भरत और शत्रुघ्न से कर दिया जाए। कुशध्वज की सहमति से राजा जनक तथा राजा दशरथ ने यह सुझाव स्वीकार कर लिया। राजा जनक ने आभूषणों से विभूषित सीता को लाकर अग्नि के समक्ष रामचन्द्र जी के साथ बिठा दिया। फिर राजा जनक ने उर्मिला का हाथ लक्ष्मण, मांडवी का हाथ भरत, और श्रुतकीर्ति का हाथ शत्रुघ्न को सौंप दिया।

अप्सराएं नृत्य करने लगीं, गीतों के मनोहर शब्द, वाद्य यंत्रों की मधुर ध्वनि के बीच में, मुनि वसिष्ठ के दिशा निर्देश से चारों राजकुमारों ने अग्नि, वेदी, राजा दशरथ तथा ऋषि मुनियों की परिक्रमा की और वेदोक्त विधि के अनुसार विवाह सम्पन्न किया। फिर सभी ने अयोध्या की ओर प्रस्थान किया। अयोध्या के हर स्थानों व मार्गों को फूलों से सुसज्जित किया गया। कौशल्या, सुमित्रा व कैकेयी अत्यंत प्रसन्न थी उन्होंनें मंगल गीतों से गूँजती ध्वनि के साथ अपने पुत्रों तथा पुत्रवधुओं का विधिपूर्वक स्वागत किया।

चारों राजकुमारों ने अपनी अपनी पत्नियों के साथ कई वर्षों तक सुखी जीवन व्यतीत किया। उन्होने लगभग 9 वर्षों तक, जिनमें कई ऋतुएं बीत गई, अयोध्या में सुखी जीवन व्यतीत किया। राजा दशरथ अपने चारों पुत्रों से स्नेह करते थे लेकिन अपने पुत्र श्रीराम के अनुपम गुणों को देखकर राजा दशरथ ने राम के राज्याभिषेक की सोची। इसके पश्चात् राजा दशरथ ने श्रीराम को राज्यसभा में बुलाया और कहा **ज्योतिषियों के अनुसार उनका अत्यंत अशुभ समय है क्योंकि उनके नक्षत्र को** सूर्य, मंगल और राहु नामक भयंकर ग्रहों ने आक्रांत कर लिया **है इसलिए वो शीघ्र श्रीराम का राज्याभिषेक करना चाहते हैं** - श्रीराम के राज्याभिषेक का समाचार अयोध्या नगरी में फूलों की सुगंध की तरह फैल गया। अयोध्या के वासी धर्मपरायण राम के राज्याभिषेक से प्रसन्न थे।

उधर कैकेयी के पास जाकर दासी मंथरा ने उसके मन में जहर भर दिया। कैकेयी ने राजा दशरथ से दो वर मांगे। पहले वर के अनुसार राम की जगह भरत का राज्याभिषेक किया जाए और दूसरे वर की आपूर्ति हेतु राम को चौदह वर्ष का वनवास दिया जाए। रानी के ऐसे वचन सुनकर राजा दशरथ संताप करते रहे और कुछ क्षण के लिए मूर्छित हो गए। श्रीराम माता कैकेयी तथा पिता दशरथ की आज्ञा का पालन करने के लिए चौदह वर्षों के वनवास हेतु प्रस्थान करने की शीघ्रता में थे। तत्पश्चात् सीता जी और लक्ष्मण सहित श्रीराम ने अपने पिता और सौतेली माता कैकेयी से वन प्रस्थान की आज्ञा मांगी। प्लैनेटेरियम सॉफ्टवेयर का उपयोग करते हुए **वनों के लिए प्रस्थान की तिथि** 5 जनवरी, 5089 वर्ष ई. पू. को दिखाई देती है। उस समय सूर्य और मंगल ग्रह रेवती नक्षत्र के समीप मीन राशि में थे जो राजा दशरथ की राशि थी। चन्द्रमा कर्क राशि में पुष्य नक्षत्र के पास था। स्टेलेरियम सॉफ्टवेयर ने यह तिथि 13 फरवरी, 5089 वर्ष ई. पू. 16:30 बजे निकाली। दोनों सॉफ्टवेयर के आकाशीय दृश्यों की तिथि चैत्र माह की शुक्ल पक्ष की नवमी अर्थात् श्रीराम के 25वें जन्मदिवस की तिथि है।

राजा की आज्ञा से सुमंत्र उत्तम एवं द्रुत घोडों से सुशोभित रथ व अन्य सामान ले आए। अयोध्या के प्रजाजन, विद्वान तथा बुजुर्ग आदि श्रीराम की वनयात्रा में उनके पीछे-पीछे चलते रहे और श्रीराम के निरंतर अनुरोध पर भी अयोध्या वापिस जाने से इंकार कर दिया। उन सभी ने तमसा नदी के तट तक श्रीराम का पीछा किया। अत्यंत थके हुए अयोध्यावासी रात्रि होने पर सो गए। तभी श्री रघुनाथजी रथ पर सवार होकर शीघ्रतापूर्वक वहां से चल दिए। श्रीराम कौशल जनपद की सीमा लांघकर श्रृंग्वेरपुर के बिल्कुल समीप पंहुच गए।

श्रृंग्वेरपुर में कोल जनजाति के राजा गुह निषाद ने श्रीराम का भव्य स्वागत किया। **श्रृंग्वेरपुर में पुरातात्विक उत्खनन मे प्राप्त हुआ प्राचीन किला और जल टैंक परिसर रामायण के संदर्भों की पुष्टि करते हैं।** प्रातः होते ही आदेशानुसार गुह ने नाव की व्यवस्था करवाई। श्रीराम, लक्ष्मण व सीता नदी पार करने के पश्चात् ऋषि भारद्वाज के आश्रम पंहुच गए। श्रीराम के पूछने पर, ऋषि भारद्वाज ने वनवास के कुछ वर्ष व्यतीत करने के लिए चित्रकूट को सबसे अनुकूल स्थान बताया। उतर प्रदेश के इलाहाबाद जिले में स्थित प्रयाग में संगम के निकटवर्ती क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण खनन किये गये हैं। यहां पर विश्व की दो महानत्तम बस्तियों नामतः झुस्सी और हेटा-पट्टी की खुदाई की गई। यहां पर पाए गए पुरावशेषों के कार्बन तिथि निर्धारण में इनकी प्राचीनता सातवीं सहस्त्राब्दी से लेकर पाँचवीं सहस्त्राब्दी ई. पू. के आस पास पाई गई है। इनका सीधा सम्बन्ध रामायण काल से है।

राजा दशरथ का निधन हो गया और भरत श्री राम को अयोध्या वापिस लेजाने में असफल रहे। कुछ समय पश्चात् श्रीराम चित्रकुट से चले गये। तीनो राजसी तपस्वियों ने दंडकवन मे प्रवेश किया। उन शाही तपस्वियों ने मुनि शरभंग के आश्रम मे जाकर उनको प्रणाम किया। इसके पश्चात् उन्हों ने सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम की ओर प्रस्थान किया। सुतीक्ष्ण मुनि ने श्रीराम को राक्षसो के वध करने की उनकी प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए आर्शिवाद दिया। श्रीराम ने दस वर्षो तक दंडकवन मे विचरण किया।

तीनों शाही सन्यासी अगस्त्य मुनि से मिलने गए। अगस्त्य मुनि ने श्रीराम को दिव्य धनुष, अमोघ बाण, बाणो से भरे दो तरकस और उत्कृष्ट तलवार भेंट की। श्रीराम ने आदरपूर्वक इनको ग्रहण किया। तत्पश्चात् तीनो ने मुनि के द्वारा बताए मार्ग का अनुसरण करते हुए नासिक के निकट स्थित पंचवटी मे प्रवेश किया। लक्ष्मण ने वहां बांस, शमी वृक्ष आदि का उपयोग करे एक कुटी तैयार की।

खर और दुषण वध से पहले पंचवटी से सूर्य ग्रहण का अवलोकन श्रीरामचन्द्र जी लक्ष्मण के साथ वार्तालाप कर कर रहे थे तभी अचानक वहाँ एक राक्षसी 'शुर्पनखा' आ पहुँची। उसने श्रीराम की सुन्दरता के कारण उनसे विवाह का प्रस्ताव रखा। श्रीराम द्वारा ठुकराए जाने पर वह वह सीता का भक्षण करने सीता की तरफ दौडी तो लक्ष्मण ने शुर्पनखा के नाक, कान काट दिया। शुर्पनखा रोते हुए वापस लौटी और शीघ्र ही खर और दुषण ने 14,000 सैनिकों को लेकर पंचवटी की ओर प्रस्थान किया। जिस समय सेना आगे बढ रही थी उस समय सूर्यग्रहण दिखाई दिया (वा. रा. 3/23/3), जब खर अपने रथ पर सवार होकर आकाश मे ग्रहो के मध्य उदित हुए मंगल ग्रह की तरह प्रतीत हो रहा था।

प्लैनेटेरियम सॉफ्टवेयर से देखने पर पाया कि दिनांक 7 अक्टूबर, 5077 वर्ष ई. पू. पौष मॉस की अमावस्या को दोपहर के समय सूर्य ग्रहण दिखाई दिया था, जिसे नासिक से देखा जा सकता था। मंगल ग्रह मध्य मे था, एक तरफ बुध, शुक्र और बृहस्पति थे और दुसरी तरफ सुर्य, चन्द्रमा और शनि ग्रह साफ देखे जा सकते थे।

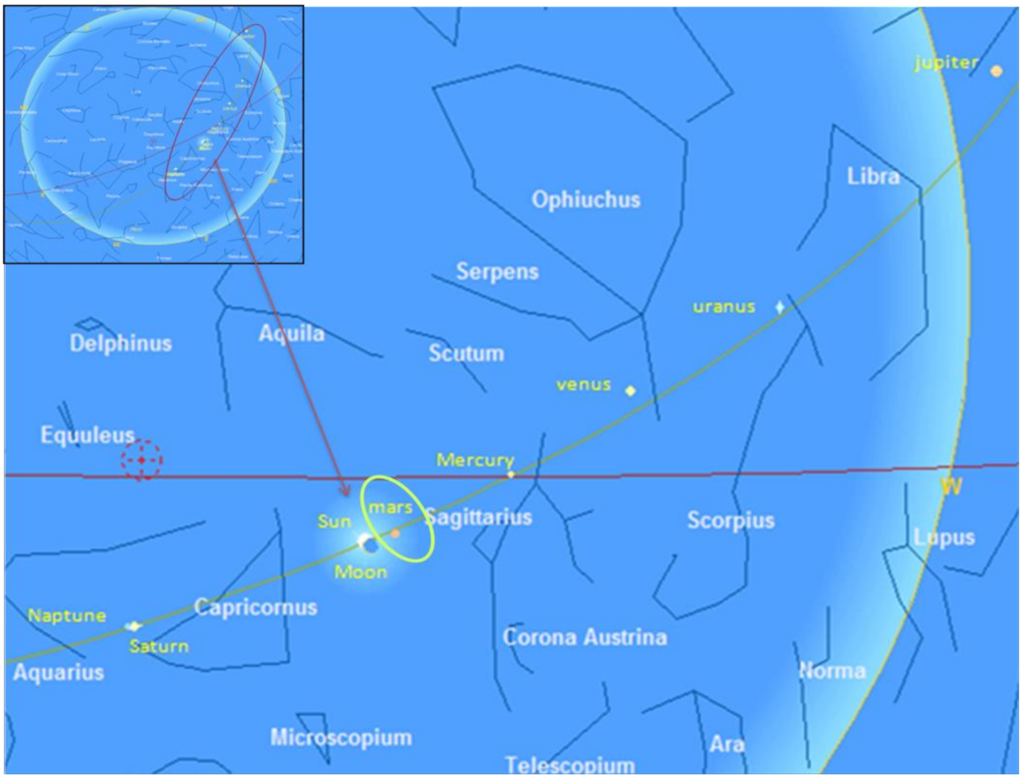

पंचवटी, नासिक (20°उत्तर, 73° पूर्व), 5077 ई. पू. की पौष अमावस्या, 14:15 बजे देखें सूर्यग्रहण
मंगल मध्य में; शनि, सूर्य और चंद्रमा एक तरफ व बुद्ध, शुक्र और बृहस्पति दूसरी तरफ; प्लेनेटेरियम द्वारा मुद्रित

स्टेलेरियम सॉफ्टवेयर सूर्य ग्रहण की तिथि 15 नवंबर, 5077 वर्ष ई. पू. को दर्शाता है। श्रीराम ने खर ओर दूषण दोनो को उनके चौदह हज़ार राक्षसों सहित मार दिया। रावण अपने मंत्रियो के साथ सभा मे बैठा था तभी अंगभंगअवस्था मे शुर्पनखा आई और सारा वृतांत सुनाया। गुस्से से लाल हुए रावण ने मारीच को सुन्दर मृग का रूप धारण करने के लिए मज़बूर किया। फिर सीता को अकेला देखकर छल बल का प्रयोग कर सीता का अपहरण कर लिया। **शोक संतप्त राजकुमार सीता की खोज में निकले और मतंगवन मे शबरी से भी मिले** ।

तत्पश्चात श्रीराम और लक्ष्मण की ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमान और सुग्रीव से भेंट हुई। श्री राम ने बाली का वध कर सुग्रीव को किष्किंधा का राजा बना दिया और उसकी पत्नी से उसका पुनर्मिलन करवा दिया। तुंगभद्रा नदी के उत्तरी तट पर स्थित एनागोंडी गॉव प्राचीन किष्किंधा माना जाता था। यह आधुनिक किष्किंधा क्षेत्र में स्थित है तथा कर्नाटक के कोपल जिले मे स्थित है।

जब वानरराज सुग्रीव का राज्याभिषेक हो गया तत्पश्चात श्रीराम चार मास के लिए प्रस्रवण पर्वत की गुफा में रहे। चार महीने के पश्चात् वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर 5076 ईसा पूर्व के कार्तिक-मार्गशीर्ष के महीने में सुग्रीव ने सीता की खोज मे वानर सेना को सभी दिशाओ मे भेजा। अंगद के नेतृत्व मे एक बहुत शक्तिशाली सेना को उप महाद्वीप के दक्षिणी क्षेत्र मे सीता जी को खोजने के लिए भेजा गया। इस शक्तिशाली दल मे हनुमान, जांबवान, नील जैसे पराक्रमी भी शामिल थे।

लंका मे चन्द्रग्रहण सीता की खोज मे हनुमान महेन्द्र पर्वत पर गये और छलांग लगाते हुए समुन्द्र के बीच मे मैनाक पर्वत पर पहुँचे । लंका मे जाने के लिए हनुमान ने फिर से छलांग लगाई। हनुमान ने देखा, रावण की लंका अत्यंत सुन्दर थी। हनुमान ने सीता की खोज में कई महलों तथा भवनो का निरीक्षण किया परन्तु सीता का कोई अता पता नही मिला। सीता की खोज करते समय वे अशोक वाटिका में चले गए। शिंशपा वृक्ष के ऊपर बैठकर हनुमान की नजर सीता पर पडी, जो राक्षसियो से घिरी हुई अत्यंत शोक संतप्त दिखाई दे रही थी। संध्या का समय था रावण ने लगभग सौ सुन्दर स्त्रियो के साथ अशोक वाटिका में प्रवेश किया। हनुमान शिंशपा पेड के घने पतो में छिप गए।

मेवाड़ रामायण से एक पन्नाए कलाकार साहिब दीन, IO San 3621 ff.3v (text) and 3r (picture);
https://www.bl.uk/ramayana

रावण लंका में अशोक वाटिका में सीता की ओर बढ रहा था। रावण को अपने पास आता देखकर सीता का मुख पूर्णिमा की रात के ग्रहण से ग्रसित चन्द्रमा के समान दिखाई दे रहा था, जो उस समय लंका के आकाश मे देखा गया था। वाल्मीकी द्वारा वर्णित पौष की पहली पुर्णिमा की रात्रि के इस चन्द्रग्रहण को प्लेनेटेरियम सॉफ्टवेयर ने कोलंबो के अक्षांश और रेखांश से दिनांक 12 सितंबर, 5076 को शाम 4:15 बजे से 6:55 बजे तक दिखाया है।

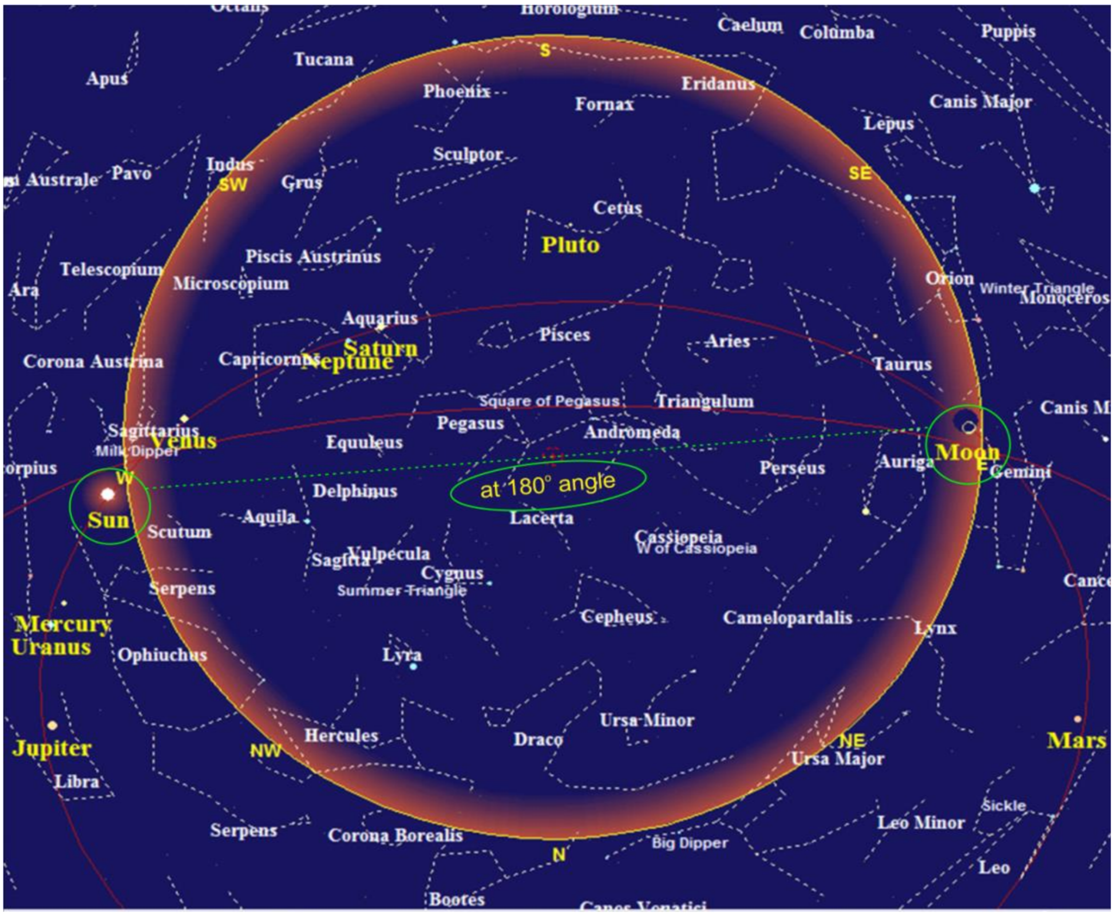

व्योम चित्र : कोलंबो, 7° उत्तर, 80°पूर्व, 12 सितंबर, 5076 ई. पू., 18:30 बजे, अशोक वाटिका में रावण के द्वारा सीता जी को धमकाते समय का चन्द्रग्रहण; प्लैनेटेरियम द्वारा मुद्रित

स्टेलेरियम सॉफ्टवेयर ने इसी चन्द्रग्रहण को कोलंबो से 22 अक्टूबर, 5076 वर्ष ई. पू. को शाम के 6:30 प्रारम्भ होते हुए दिखाया गया है। सीता ने रावण को जमकर फटकारा। रावण के क्रोध को देखकर मंदोदरी और धान्यमालिनी उसे अपने साथ ले गईं। इसके बाद हनुमान ने सीता को श्रीराम के द्वारा दी गई मुद्रिका भेंट की। सीता ने प्रसन्नचित होकर उस मुद्रिका को आंखो से लगा लिया। इसके बाद उन्होने एक वस्त्र की गांठ को खोलकर चूरामणि निकाली और हनुमान को देते हुए कहा कि वह इसे स्मृति चिन्ह के रूप मे श्रीराम को दे।

एकाएक हनुमान ने अपने शरीर का खिंचाव कर लिया **अशोक वाटिका का विनाश** कर दिया; **रावण के पुत्र अक्षय कुमार का वध** कर दिया। **रावण ने हनुमान की पूंॅछ में आग लगवाई; हनुमान ने सोने की लंका को जला डाला।** हनुमान 14 सितंबर, 5076 ई. पू. को वापिस चल दिए। श्रीराम तथा सुग्रीव को प्रणाम करके हनुमान ने सीता की खोज के बारे मे विस्तार से बताया। हनुमान ने विस्तार से सीता जी की दयनीय स्थिती के बारे मे बताया और कहा कि सीताजी श्रीराम के प्रति अपनी वफादारी से तनिक भी विचलित नही हुई। इसके बाद हनुमान ने सीता जी द्वारा चिन्ह स्वरूप दी गई चूड़ामणि श्रीराम को सौंप दी।

19 सितंबर, 5076 वर्ष ई. पू.; स्टेलेरियम के अनुसार 30 अक्टूबर 5076 ई. पू. को श्रीराम और सुग्रीव की विशाल सेना ने दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। सभी ने सह्या तथा मलय पर्वत श्रृंखला को पार किया। वे सभी कर्नाटक के कोपल जिले के पर्वत प्रस्रवण से आधुनिक हसन जिले के क्षेत्र से होते हुए मैसूर पंहुच गएए जहां एक शिव मंदिर आजतक सुरक्षित रखा गया है। वहां से वे त्रिचुरापपल्ली चले गए, फिर मदुरई के इलाको को पार कर वे रामनाथपुरम् पहुॅचे। श्रीराम महेन्द्रगिरी पर्वत पर पहुँचे और शीघ्र ही पहाडी पर चढ गए तथा विशाल समुन्द्र को देखने लगे।

उधर रावण से अपमानित होकर विभीषण अपने चार मंत्रियो सहित श्री राम की शरण में चले गए। रावण ने उस समय मंत्रियों को एक गुप्त रहस्य बताया कि एक बार ब्रह्माजी ने क्रोधित होकर उसे शाप दिया कि यदि तुम किसी स्त्री की इच्छा के विपरीत बलपूर्वक समागम करोगे तो तुम्हारे मस्तिष्क के सात टुकडे हो जाऐगें। इसी कारण मै सीता के साथ कोई जबरदस्ती नहीं कर पा रहा हूँ ।

श्रीराम और उसकी सेना समुन्द्र के निकटवर्ती क्षेत्र मे शिविर लगाए हुए थी। वास्तुकार नल ने श्रीराम के द्वारा चिन्हित समुद्री मार्ग पर सेतु बनाने का निश्चय किया। नल ने वानर सेना को साल, ताड, अश्वकर्ण, बांस, अर्जुन, ताल, बिल्व और नारियल, आम, अशोक, वकुल, तिलक, अनार, नीम इत्यादि के पेड तथा पत्थरो और चट्टानो को लाने का आदेश दिया। समुन्द्र मे सेतु की संरचना पाँच दिन मे पूरी कर ली गई सेतु का निर्माण वहां पहले से विद्यमान द्वीपों, चट्टानो तथा बरेतियों की प्राकृतिक श्रृंखला के अंतरालो को भरकर किया गया। सेतु की संरचना अदभुत थी, जिसको देखकर देवता गधर्व तथा मानव आश्चर्यचकित थे। लाखो रोमांचित वानर शीघ्र ही सेतु के उस पार पहुँच गये।

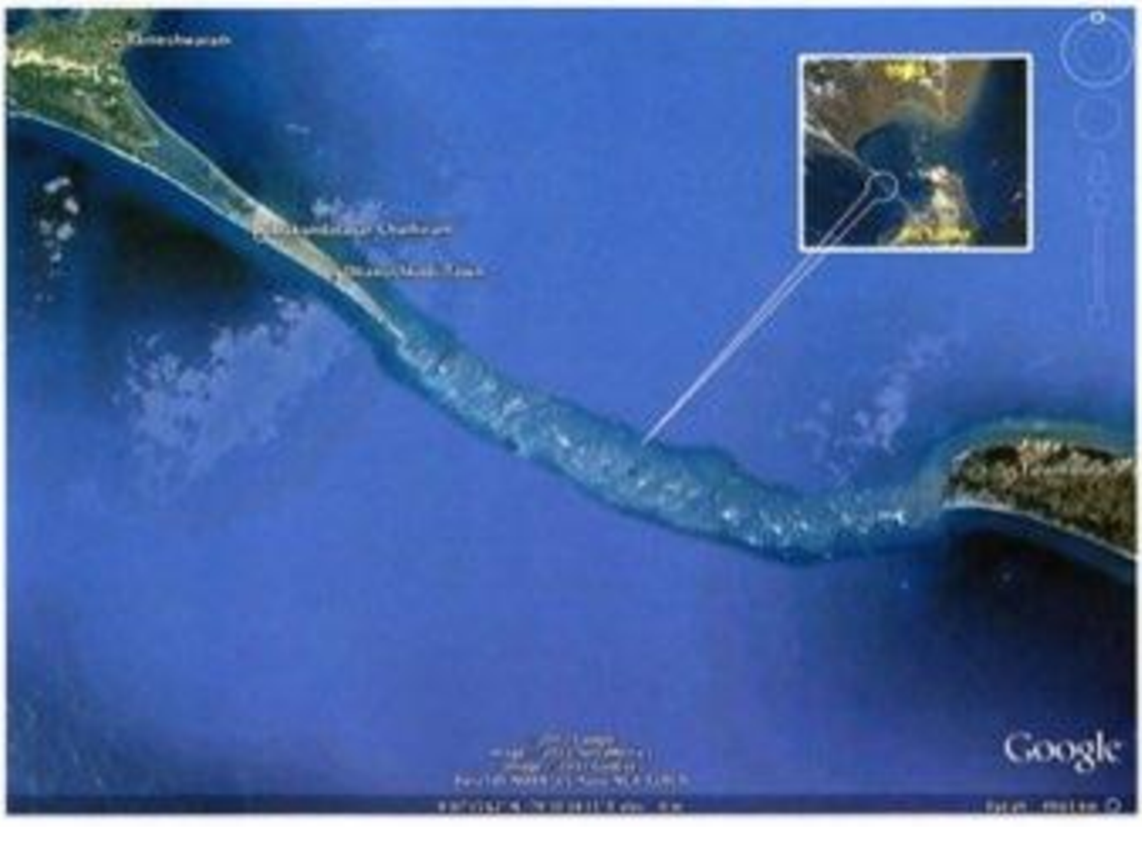

धनुषकोटि और थलाईमन्नार के बीच रामसेतु का गूगल प्रतिबिंब

(सेतु से सम्बंधित कुछ दिलचस्प तथ्य - भारतीय ड्रेजिंग निगम (डी. सी. आई.) के द्वारा हॉलैण्ड से आयातित ड्रेंजर रामसेतु पर कार्य प्रारंभ करते ही दो भागों में टूट गया तथा समुद्र में डूब गया। डी. सी. आई. की क्रेन से जब उस डूबे ड्रेंजर को निकालने की कोशिश की गई तो वह भी टूट कर जलमग्न हो गई। जब रूसी इंजिनियर दुर्घटना की जाँच करने के लिए गए तो उनकी टाँग टूट गई । ये सभी अनहोनी घटनाएँ श्रीराम से संबंधित दैवीय रहस्यों में तथा रामसेतु में लोगों के विश्वास को मजबूत करती हैं। भू-वैज्ञानिकों ने इन दुर्घटनाओं की विश्वसनीय वैज्ञानिक व्याख्या भी दी है)

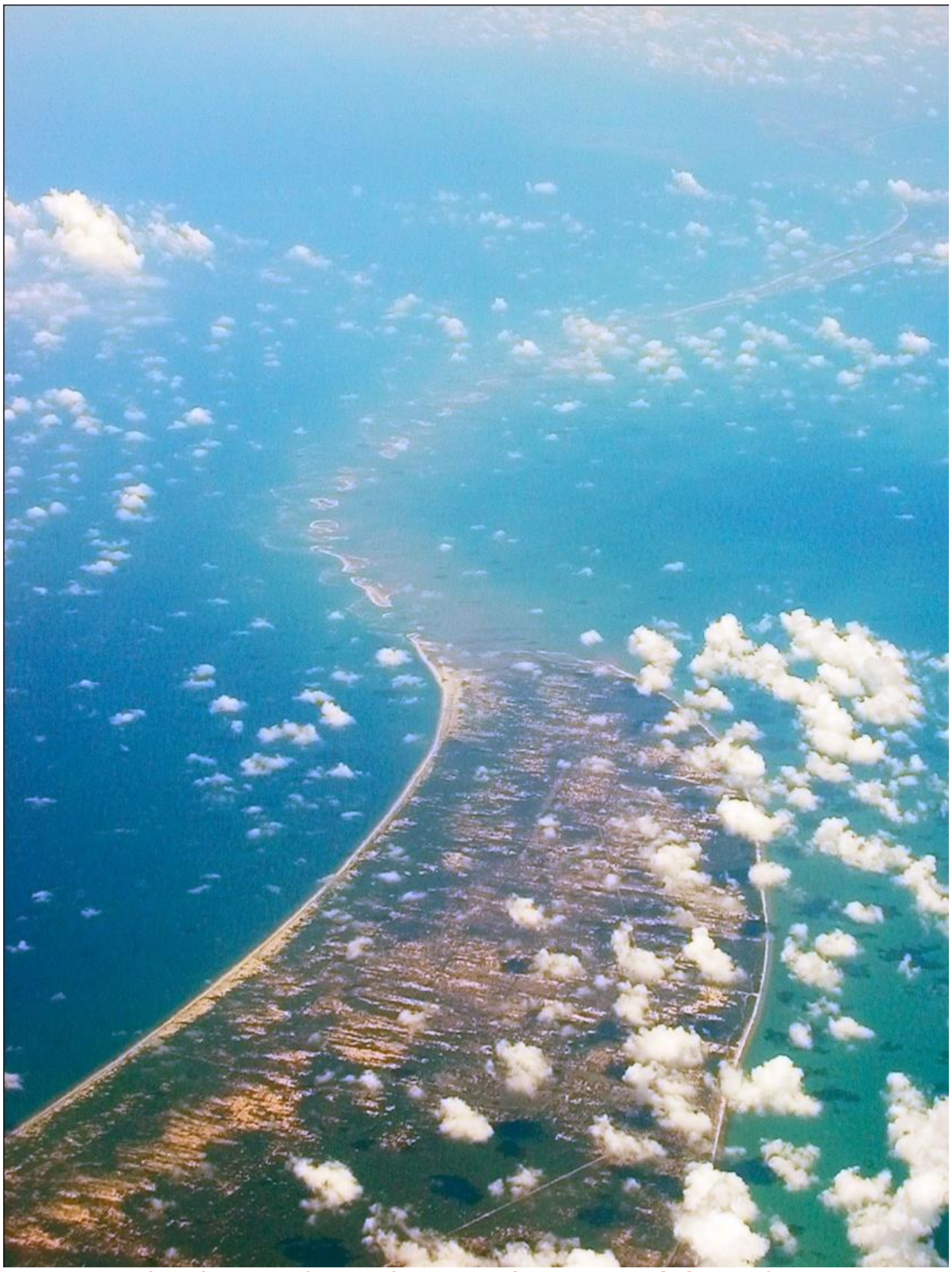

रामसेतु की यह तस्वीर प्राकृतिक श्रृंखला के अंतराल भरने में मानवीय हाथ के योगदान को स्पष्ट दर्शाती है;

पहली तस्वीर दर्शाती है कि 7100 वर्ष पहले पानी का स्तर आज के जल स्तर से लगभग तीन मीटर नीचे था तो द्वीपों, पर्वतों और बरेतियों की एक श्रृंखला समुद्र में दिखाई देती होगी। द्वितीय तस्वीर डूबे हुए सेतु के एक ऐसे भाग को दर्शाती है, जो वास्तुकार नल के पर्यवेक्षण में पाँच दिनों में भरे गए पाँच भागों में से एक भाग को स्पष्ट दिखाती है। राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, गोआ द्वारा तैयार किए गए नूतन युग के समुद्र जल स्तर वक्र के अनुसार 7200 - 7000 वर्ष पूर्व के बीच जल का स्तर आज के जल के स्तर से लगभग तीन मीटर नीचे था। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि लगभग 7100 वर्ष पूर्व, यह सेतु समुद्री जल स्तर से ऊपर था तथा इसका उपयोग भारत और लंका के बीच भू-मार्ग के रूप में किया जा सकता था। अगले तीन हजार वर्षों तक सेतु समुद्र के जल में जलमग्न रहा।

नूतन युग का समुद्री जल स्तर वक्र

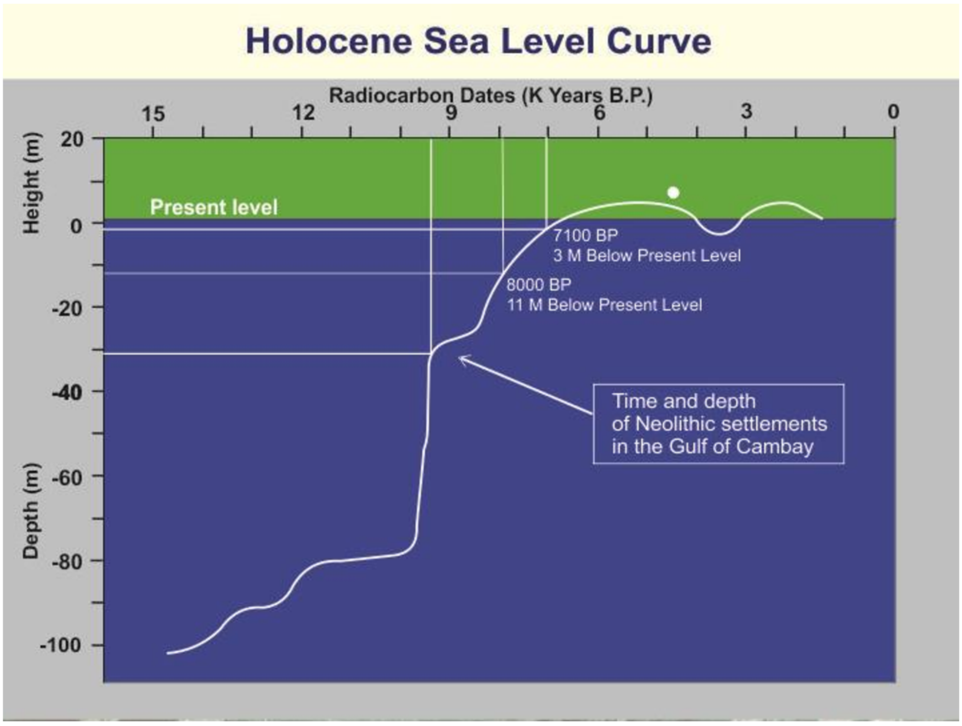

सेतु को पार कर श्रीराम की **सेना सुवेल पर्वत पर पंहुच गई। वहां शिविर का निर्माण कर लंका को सभी ओर से घेर लिया।** पर्वत की चोटी से श्रीराम और सुग्रीव ने लंका नगरी का सर्वेक्षण किया। यह 12 अक्तूबर, 5076 वर्ष ई. पू. की चाँदनी रात थी। जब पौष माह की समाप्ति और माघ मास का प्रारम्भ हो रहा था। रावण और श्रीराम की सेनाओं के बीच में घनघोर युद्ध कई दिनों तक चला। श्री राम ने कुम्भकरण का तथा लक्ष्मण ने इंद्रजीत का वध कर दिया।

उससे पहले इंद्रजीत ने ब्रह्मास्त्र का प्रहार कर लक्ष्मण को मूर्छित कर दिया था। जाम्बवान से आज्ञा पाकर हनुमान हिमालय पर्वत पंहुचे। पर्वत की चोटी का ऊपरी हिस्सा उखाड कर चार औषधियां - मृतसंजीवनी, विशल्यकरणी, सवर्णकरणी और संधानी लंका ले आये और लक्ष्मण होश में आकर उठ खड़े हुए थे। **नुवारा एलिया से लगभग दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित हकागाला बाग में रतिगला की यात्रा से पता चला कि हिमालय की जड़ी-बूटियाँ श्रीलंका के अन्य वृक्षों और जड़ी-बूटियों से बिल्कुल अलग हैं जो**

वास्तव में वहाँ देखी जा सकती हैं। अंत में श्री राम ने अगस्त्य मुनि द्वारा दिए गए अमोघ वाण से रावण को भी मौत की नींद सुला दिया।

तत्पश्चात रावण का दाह संस्कार किया गया और विभीषण का लंका के राजा के रूप में राज्याभिषेक कर दिया गया। पुष्पक विमान पर आरूढ़ होकर श्री राम सीता और लक्ष्मण सहित तथा विभीषण, सुग्रीव, हनुमान और अंगद आदि को साथ लेकर अयोध्या की ओर चल दिए। अयोध्या में श्रीराम का भव्य स्वागत हुआ। **इसके पश्चात् वसिष्ठ, वामदेव, जाबालि, कश्यप, कात्यायन, सुयज्ञ, गौतम और विजय - इन आठों मन्त्रियों और ऋषियों ने चारों समुद्रों से लाए स्वच्छ तथा सुगन्धित जल से सीतासहित श्रीराम का अभिषेक कराया। प्रजा के कल्याण को सर्वोत्तम प्राथमिकता देने की जिम्मेदारी लेते हुए, श्रीराम ने एक आदर्श राजा का उदाहरण प्रस्तुत किया, जो आज तक अद्वितीय बना हुआ है।**

श्री राम की सर्वाधिक सम्मानित भूमिका एक समाज सुधारक के रूप में थी। श्रीराम के समय में भी जाति प्रथा, सामाजिक भेदभाव और बाहुबलियों द्वारा कमजोर वर्ग पर अत्याचार करने का सिलसिला शुरू हो गया था। श्रीराम ने समाज में से इन कुप्रथाओं और बुराइयों का अंत करने की जिम्मेदारी स्वयं के ऊपर ले ली थी। उन्होंने पहला संदेश दिया कि मनुष्य अपने जन्म या जाति से राक्षस नहीं बनता बल्कि वह अपने कृत्यों से राक्षस बनता है। श्रीराम ने रावण, खर, दूषण और त्रिशिरा का वध किया। ये सभी मूलत: ब्राह्मण थे परंतु अपने अधम तथा पापपूर्ण कृत्यों के कारण राक्षस बन गए थे। श्रीराम ने रावण के सगे भाई विभीषण को लंका का राजा बनाया। यह भी प्रतीत होता है कि श्री राम के जीवनकाल के दौरान लोगों ने दलितों और आदिवासी लोगों को नीच मानना शुरू कर दिया था। इस बुराई के विरुद्ध कठोर संदेश देने के लिएए श्री राम ने कोल जनजाति के मुखिया गुह निषाद को गले लगाया था और उन्हें भरत की तरह प्रिय भाई का दर्जा दिया था। श्री राम भीलनी उर्फ शबरी के आश्रम में भी गए थे और वहां उस निम्न जाति की कही जाने वाली स्त्री का आतिथ्य बड़े प्रेम तथा आदर से स्वीकार किया था। उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों को महर्षि वाल्मीकि जी द्वारा पोषित तथा शिक्षित करने के लिए भेजा। महर्षि वाल्मीकि को शूद्र माना जाता था लेकिन वह बहुत महान विद्वान, उत्कृष्ट खगोलशास्त्री और सम्मानित ऋषि थे।

वास्तव में, रघुवंशी श्री राम एक आदर्श पति भी थे परन्तु उनके इस आदर्श को उचित परिप्रेक्ष्य में समझा नहीं गया। सीता जी के साथ विवाह होने के पश्चात श्रीराम ने पुनर्विवाह करने का विचार कभी नहीं किया। श्री राम और लक्ष्मण दोनों ने वनों में इधर-उधर विचरण करते हुए सीता जी की देखभाल की थी तथा उन को प्रसन्न रखने के लिए सभी प्रयास किए थे। उन्होंने मिथिला की राजकुमारी सीता को किसी भी प्रकार का कोई भी दुख पहुंचाने का प्रयास करने वालों को कभी माफ नहीं किया था। सीता जी के लिए ही राक्षस विराध का वध हुआ और सीता जी की रक्षा तथा प्रतिष्ठा के लिए ही शूर्पणखा की नाक और कान काट लिए गए थे। जब खर और दूषण 14,000 सैनिकों के साथ आक्रमण करने आए थे, तब श्रीराम ने लक्ष्मण को सीता जी की रक्षा करने का आदेश दिया और श्रीराम ने अकेले ही लड़ते हुए उन सभी का वध कर डाला था। सीता जी को रावण के चंगुल से मुक्त कराने के लिए जिस प्रकार का कठोर प्रयास श्रीराम ने किया वह मानवता के इतिहास में सदा अद्वितीय रहा है और रहेगा।

श्रीराम अपनी दिव्यता से अनभिज्ञ थे। उन्होंने सदैव एक प्रतिष्ठित और मर्यादा पुरुषोत्तम की तरह व्यवहार किया। हम सबका कर्तव्य है कि हम श्री राम का नाम विवादों में न उलझने दें और हमारे बच्चों तथा

भावी पीढ़ियों को श्री राम को उनका वास्तविक आदर्श बनने दें, जिससे कि वे श्री राम के महान गुणों का हृदय से अनुसरण करके उन्हें अपने जीवन में आत्मसात कर सकें।

सरोज बाला
भारतीय राजस्व सेवा से सेवानिवृत्त
वेदों पर वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान की पूर्व निदेशक
गुरुग्राम – 2020

कई दिलचस्प तथ्य व सूचनाएं निम्नलिखित पर भी मिलेंगी -

YouTube Channel: https://www.youtube.com/c/RigvedatoRobotics/videos

Blog: https://sarojbala.blogspot.com/

Documentary: https://www.youtube.com/watch?v=GASsp7lYjnY&t=122s